4. 'गाँव की अनिवार्य आवश्यकताएँ' – निबंध के आधार पर ग्रामीण संस्कृति और लोक जीवन पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

निबंध के तत्वों के आधार पर 'ज़बान' निबंध की समीक्षा कीजिए।

5. 'गंगा स्नान करने चलोगे?' पाठ का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

विष्णु प्रभाकर की रचना 'वापसी' के कथ्य को स्पष्ट कीजिए।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** पर टिप्पणी लिखें : (7)

(क) 'गिल्लू' रचना का सारांश

(ख) प्रेमचंद युगीन कहानी

(ग) संस्मरण की विशेषताएँ

[This question paper contains 4 printed pages.]

Maitreyi College LIBRARY Chanakyapuri, New Delhi-110021

05.01.2024(E)

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 3247 **G**

Unique Paper Code : 52051317

Name of the Paper : हिंदी भाषा और साहित्य 'ग'

Name of the Course : **B.Com. (Prog.)**

Semester : III

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10+10=20)

(क) "नौकरी में क्यों नहीं लेंगे? सामने ही खादी पहनकर गया तो क्या हुआ? जो व्यक्ति परिस्थितियाँ देखकर अपने को बदल लेता है वह वाकई बहुत हुशियार है। मनुष्य को चाहिए कि वह जैसा समय देखे वैसा करे, चाहे मन मार कर ही सही।" नेताजी ने कहा।

munotes.in

अथवा

मिस्टर शामनाथ सिगरेट मुँह में रखे, फिर अधखुली आँखों से माँ की ओर देखने लगे, और माँ के कपड़ों की सोचने लगे। शामनाथ हर बात में तरतीब चाहते थे। घर का सब संचालन उनके अपने हाथ में था। खूँटियाँ कमरों में कहाँ लगाई जाएँ, बिस्तर कहाँ पर बिछे, किस रंग के पर्दे लगाएँ जाएँ, श्रीमती कौन-सी साड़ी पहनें, मेज़ किस साइज की हो... शामनाथ को चिंता थी कि अगर चीफ़ का साक्षात माँ से हो गया, तो कहीं लज्जित नहीं होना पड़े। माँ को सिर से पाँव तक देखते हुए बोले—तुम सफ़ेद क़मीज़ और सफ़ेद सलवार पहन लो, माँ। पहन के आओ तो, ज़रा देखूँ।

(ख) मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की सांस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी। आवश्यक कागज-पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब से यह नित्य का क्रम हो गया।

अथवा

कितना सुन्दर संचालन है, कितनी सुन्दर व्यवस्था! लाखों सिर एक साथ सिजदे में झुक जाते हैं, फिर सबके सब एक साथ खड़े हो जाते हैं, एक साथ झुकते हैं, और एक साथ घुटनों के बल बैठ जाते हैं। कई बार यही क्रिया होती है, जैसे बिजली की लाखों बत्तियाँ एक साथ प्रदीप्त हों और एक साथ बुझ जाएँ, और यही क्रम चलता, रहे। कितना अपूर्व दृश्य था, जिसकी सामूहिक क्रियाएँ, विस्तार और अनंतता हृदय को श्रद्धा, गर्व और आत्मानंद से भर देती थीं, मानों भ्रातृत्व का एक सूत्र इन समस्त आत्माओं को एक लड़ी में पिरोए हुए हैं।

2. हिन्दी गद्य के उद्भव और विकास में प्रेस की भूमिका का उल्लेख कीजिए। (12)

अथवा

हिन्दी नाटक के प्रमुख तत्वों पर प्रकाश डालिए।

3. 'ईदगाह' कहानी के आधार पर हामिद के गुणों का वर्णन कीजिए। (12)

अथवा

'चीफ़ की दावत' कहानी के उद्देश्य पर विचार कीजिए।

munotes.in